MOOD- DISORDER :-

मानसिक रोग के कुछ प्रकार ऐसे भी होते है जिनमे अति प्रसन्नता या दुःख के कारण सम्बन्धित व्यक्ति के संवेग, भाव, एवं मनोदशा मे इतनी अधिक विकृति उत्पन हो जाती है कि इससे इसकी कार्यक्षमता और समायोजन बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है। DSM-IV मे इन्हे मनोदशा (MOOD) या भावात्मक (Affective) विकृति के नाम से जाना जाता है, इससे सम्बन्धित एक रोगी कभी बहुत अवसादी अर्थात, दुःखी, उदास और निराशा हो जाता है तो दुसरा रोगी बहुत अधिक उल्लासित, आवेगशील और सक्रिय हो जाता है। या फिर एक ही रोगी दो विपरित भावनाओ (उन्माद और विषाद) के बीच पैन्डुलम के समान कभी एक भाव के अन्तिम छोर या ध्रुव तो कभी दुसरे भाव के अन्तिम छोर या ध्रुव के तरफ जाकर अपने भाव के अनुरूप लक्षण प्रकट करता है ये सभी अवस्थाऐ सम्बन्धित रोगियो के व्यक्तिगत, समाजिक, और व्यसायिक जीवन में गहरा प्रतिकूल या घातक प्रभाव डालती है।

DYSTHYMIA - DISORDER - डाइस्थीमिया- विकृति

डाईस्थीमिया या डाइस्थीमिक विकृति को यूनिपोलर डिसऑर्डर डाईस्थीमिया के नाम से जाना जाता है, यह एक ऐसी मनोदशा विकृति है, जिसमे सम्बन्धित व्यक्ति, उदासी दुःख, उदासीनता का तीव्र अनुभव गत कुछ सालो से प्रायः प्रतिदिन अधिक समय तक करने मे आता है अर्थात, इस विकृति का स्वरूप चिरकालिक या दीर्घकालिक (Cronic) होता है। लम्बे समय से रोगी किसी वस्तु घटना या व्यक्ति के प्रति अभिरूचि या सुखद भाव की अनुभूति नही कर पाता है। इस रोगी से पीड़ित रोगी के विषादी लक्षणों की गम्भीरता उन्माद- अवसाद विकृति की तरह

नही होते है और न तो यह लगातार रूप से रोगी मे रोगी मे उपस्थित रहते है, फिर भी ये अधिकांशत: बने रहते है इसके अतिरिक्त रोगी मे उन्माद (Mania) तथा तीव्र उन्माद (Hypermania) का कोई लक्षण नही उपस्थित होता है। कुलर के अनुसार " इस रोग की अवधि दो साल से लेकर २० वर्ष तक होती है तथा इसकी औसत अवधि (Average Duration) लगभग 5 साल की होती है इसका आक्रमण समान्यत: 18 साल से 64 साल के व्यक्तियों मे होता है। डाइस्थीमिया का रोगी खुद को अकेला और असहाय महसूस करता है तथा हल्की सी उत्तेजना से रो पड़ता है वह कभी - कभी आत्महत्या के बारे में भी सोचता है परंतु आत्महत्या करने की संभावना उतनी अधिक नही होती है यह रोग पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियो मे अधिक पाया जाता है।